आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 4 दिसम्बर, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

पशुपालन में विविधिकरण अपना कर कल को समृद्ध बनाएं

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाईयों और बहनों !

राम–राम सा ।

राजस्थान ने अपने उन्नत पशुधन से एक अलग पहचान कायम की है। स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल यह राज्य गाय, भैंस, अश्व, ऊंट, भेड़ और बकरी की विभिन्न नस्लों में संपन्न है। जैव विविधिता इस प्रदेश की विशेषता है। आज के बदलते युग में कृषि में फल, फूल, सब्जी और खेती की विविधता की तरह ही पशुपालन में भी विविधता जरूरी है। किसान और पशुपालक विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपना कर अपनी आय में सरलता से बढ़ोतरी कर सकते हैं। पशुपालन में विविधता लाने के लिए पारंपरिक पशुपालन (गाय, भैंस, भेड़, बकरी व ऊंट) के साथ ही सूअर, मुर्गी, मत्स्य, खरगोश, मधुमक्खी, एमू, सजावटी मछलियां व बतख, जापानी नस्ल की बटेर, टर्की व गिनी फाउल के पालन की विपुल संभावनाएं विद्यमान हैं। कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए पशुपालन की इन विधाओं को पूरक रूप में अपनाना, अब समय की मांग है। इनका व्यावसायिक पालन आपके लिए एक नियमित आय का हमेशा सुकून देने वाला एक जरिया बन सकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत पशु विविधिकरण सजीव मॉडल स्थापित है। इसका उद्देश्य किसान और पशुपालकों को लाभकारी पशु–पक्षियों की प्रजातियों के पालन की ओर आकर्षित करना है जिससे वे अपनी आय में वृद्धि कर उपलब्ध संसाधनों का पूरा लाभ उठा सकें। इसके लिए विश्वविद्यालय में छोटी अवधि के लघु पाठ्यक्रमों का भी प्रावधान है, जिसमें किसान और पशुपालक एक निश्चित संख्या होने पर इसका लाभ उठा सकते हैं। इधर–उधर घूम रहे बेरोजगार युवा घर या गांव में ही रहकर इनको व्यावसायिक रूप में अपना सकते हैं। आओ! हम पशुपालन में विविधिकरण को अपना कर आने वाले कल को समृद्ध बनाएं।

जयहिन्द!

(प्रो. बी. आर. छीपा)

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट उदयपुर में माननीय पशुपालन मंत्री श्री प्रभूलाल सैनी द्वारा
प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा प्रकाशित पशुपालन नए आयाम के नवीन अंक का विमोचन

मुख्य समाचार

सूरतगढ़ के 50 कृषकों के दल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर जानी वैज्ञानिक पशुपालन की तकनीकें

कृषि विभाग की आत्मा परियोजना के तहत श्री गंगानगर जिले के सूरतगढ़ ब्लॉक के 50 कृषक एवं पशुपालकों के दल ने 9 नवम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर पशुपालन की विभिन्न तकनीकों को देखा और जानकारी ली। उन्होंने म्यूजियम का अवलोकन कर हरे चारे उत्पादन की अजोला इकाई के बारे में पूरी रूचि लेकर जानकारी ली। अजोला इकाई में वर्ष भर हरा चारा घर या खेतों में ही उपलब्ध होता है। महिला कृषकों ने कुक्कुटशाला में पशु विविधिकरण सजीव मॉडल में विभिन्न पशु–पक्षियों के पालन और उनके आय बढ़ाने के बारे में जानकारी प्राप्त की। मुर्रा भैंस, मुर्गी, बतख और खरगोश पालन के साथ–साथ टर्की और एमू पालन को बड़े गौर से देखा। प्रसार शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. देवी सिंह और डॉ. पंकज मिश्रा ने उन्हें जानकारी दी। सहायक कृषि अधिकारी श्री प्रेमकुमार यादव दल का नेतृत्व कर रहे थे।

वैज्ञानिकों का शीतकालीन प्रशिक्षण संपन्न
देशी पशुधन हमारे लिए वरदान : कुलपति प्रो. छीपा
जलवायु–मौसम के प्रति संवेदनशीलता जरूरी : डॉ. राठौड़

भारतीय मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. एल.एस. राठौड़ ने कहा कि आजादी के बाद से देश में पशुधन की लगभग 35 प्रतिशत प्रजातियां लुप्त

हुई हैं जो एक सामयिक और गंभीर चिंता का विषय है। डॉ. राठौड़ 19 नवम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में देशी पशुओं की नस्लों के संरक्षण एवं संवर्द्धन विषय पर वैज्ञानिकों के 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण के समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के वित्तपोषित शीतकालीन प्रशिक्षण में देश के 11 राज्यों से आए 25 वैज्ञानिक – विशेषज्ञों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि डॉ. राठौड़ ने कहा कि वैज्ञानिकों को सोचना होगा कि हरित क्रांति और शोध के बावजूद भी देश के कुल दुग्ध उत्पादन में देशी गोवंश का योगदान एक प्रतिशत का ही है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में विदेशी और संकर नस्लों के मुकाबले देशी पशुधन अधिक कारगर और लाभदायक है। ब्राजील में गिर की नस्ल के पोषण स्तर और प्रबंधन उपायों से 40 से 60 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देशी पशुओं के पोषण में स्थानीय वनस्पति का उपयोग औषधी का काम करती है। पूर्व महानिदेशक ने कहा कि देश में जलवायु या मौसम के प्रति संवेदनशीलता में कमी का नुकसान कृषकों और पशुपालकों को उठाना पड़ता है। मौसम परिवर्तन के अनुकूल उपायों से रोगों की रोकथाम हो सकती है अतः उन्हें जागरूक किया जाए। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि बदलते जलवायु परिवेश में देशी पशुधन हमारे लिए वरदान स्वरूप है। मौसम के प्रति अनुकूलन, कम पोषण खर्च और इनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता भी किसी से कम नहीं है। अतः यह हमारे लिए सर्वथा हितकारी है। उन्होंने आशा जताई कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम से पूरे देश के देशी पशुओं की नस्लों के विकास कार्यों को गति मिलेगी। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने स्वागत भाषण में देशी पशुधन नस्लों की विशेषताओं व उपयोगिता तथा वेटरनरी विश्वविद्यालय में इस क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान कार्यों की जानकारी दी। राजुवास के छात्र कल्याण अधिष्ठाता और प्रशिक्षण निदेशक प्रो. एस.सी. गोस्वामी ने बताया कि 21 दिवसीय प्रशिक्षण में 60 विषय–विशेषज्ञों के व्याख्यान और डेमो प्रस्तुत किये गए। प्रायोगिक कार्य के रूप में वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय, उष्ट्र, भेड़ एवं ऊन, अश्व अनुसंधान केन्द्रों, राजुवास के पशुधन अनुसंधान केन्द्र चांदण, बीकानेर, बीछवाल और कोड़मदेसर के भ्रमण के अलावा वेटरनरी विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में कार्य प्रणाली का अवलोकन किया।

जोधपुर में 13वां वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शुरू

जोधपुर में राज्य का 13वां वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शुरू हो गया है। जोधपुर के पटवार प्रशिक्षण केन्द्र के एक भवन में स्थापित इस केन्द्र में पशुपालकों को दो पशुचिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाएं भी उपलब्ध करवाई गई हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि जोधपुर की विधायक श्रीमती सूर्यकांता व्यास के अथक प्रयासों की बदौलत वर्तमान पटवार प्रशिक्षण केन्द्र में तीन कक्ष, हॉल और अन्य आवश्यक सुविधाओं वाले भाग में केन्द्र ने कार्य शुरू कर दिया है। केन्द्र पर प्रभारी अधिकारी, टीचिंग एसोसिएट, कम्प्यूटर ऑपरेटर और सहायक की सेवाएं सुलभ करवाई गई है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा और विधायक श्रीमती सूर्यकांता व्यास ने इस केन्द्र का निरीक्षण किया। निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देश पर नगर निगम, जोधपुर द्वारा जोधपुर जिले के गेवां गांव के खसरा नम्बर 8 में 5 बीघा भूमि का निःशुल्क आंवटन वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र को किया गया है। इस भूमि पर विश्वविद्यालय द्वारा शीघ्र ही केन्द्र के नए भवन का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इसके निर्माण होने तक केन्द्र पटवार प्रशिक्षण

केन्द्र के भवन में संचालित किया जाएगा। प्रो. सिंह ने बताया कि इस केन्द्र में 3 विषय विशेषज्ञों की सेवाओं के साथ पशुचिकित्सा की रोग निदान प्रयोगशालाओं की स्थापना करके पशुचिकित्सा सेवाओं को प्रभावी तरीके से लागू किया जाएगा। इससे जोधपुर जिले के किसान और पशुपालक लाभान्वित होंगे। केन्द्र द्वारा पशुचिकित्सा अनुसंधान और सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। गांव और जिले के सुदूर क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र दिवस, प्रदर्शनियां और पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर पशुपालकों को लाभान्वित किया जाएगा।

विजयनगर ब्लॉक के 30 कृषकों का राजुवास में भ्रमण

उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक आत्मा श्री गंगानगर के सौजन्य से अन्तर राज्य कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत विजयनगर पंचायत समिति ब्लाक के 30 कृषकों के एक दल ने 23 नवम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय पहुँचे। वेटरनरी कॉलेज के प्रसार शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. देवीसिंह राजपूत और डॉ. पंकज मिश्रा ने उन्हें डेयरी, पोल्ट्री फॉर्म और राजुवास तकनीकी म्यूजियम का भ्रमण करवा कर पशु–पक्षियों के रखरखाव, पोषण, चिकित्सा और उपचार सेवाओं की जानकारी दी। कृषकों को भैंस की देशी नस्ल की मुर्रा, मुर्गियों और बतखों की विभिन्न प्रजातियों के पालन और उनसे व्यावसायिक उत्पादन लिए जाने के बारे में विस्तार से बताया।

कैनाइन ऑफ्थैलमालॉजी चिकित्सा की विशिष्ट सेवाएं सुलभ विशेषज्ञों द्वारा फैको पद्धति से 20 श्वानों में लैंस प्रत्यारोपण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग में श्वानों के आँखों की शल्य चिकित्सा व उपचार की संपूर्ण जांच के लिए अत्याधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के साथ सुपर स्पेशियेल्टी चिकित्सा केन्द्र की स्थापना की गई है। यह केन्द्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के द्वारा वित्त पोषित "डिमस्का" परियोजना के तहत बना है। सर्जरी विभाग के प्रमुख एवं परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि केन्द्र में श्वानों में अंधता निवारण की संपूर्ण जांच और उपचार की परम विशिष्ट सेवाओं के तहत मोतियाबिंद का उपचार फैको पद्धति द्वारा किया जाकर श्वानों में कृत्रिम लैंस प्रत्यारोपण का कार्य किया जा रहा है। केन्द्र के सह–अन्वेषक डॉ. सुरेश कुमार झीरवाल ने बताया कि अब तक 20 से भी अधिक श्वानों की आँखों में लैंस लगाए जा चुके हैं। इन श्वानों में मोतियाबिंद के कारण से दिखना बंद हो गया था। इनके सफल ऑपरेशन के बाद नेत्र ज्योति वापिस आ गई है। ये श्वान जयपुर, जोधपुर, कोटा, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, उदयपुर जिलों से श्वान पालक यहाँ लेकर आये थे। वैज्ञानिकों की श्वानों द्वारा आँख की सर्जरी की सफलता इस बात का प्रमाण है कि श्वानपालकों में श्वानों की आँखों के ऑपरेशन के बाद जागरूकता आई है।

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट उदयपुर में राजुवास की प्रदर्शनी में पशुपालन की नवीन व उन्नत तकनीकी से लाभान्वित हुए किसान

राज्य सरकार द्वारा उदयपुर में 7 से 9 नवम्बर 2017 को संभाग स्तरीय ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालन की आधुनिक तकनीक व उन्नत पशुधन की विशेषज्ञों को मॉडल, चार्ट, पोस्टर और रंगीन फोटोग्राफ द्वारा प्रदर्शित कर विशेषज्ञों द्वारा मौके पर ही वैज्ञानिक पशुपालन के तौर–तरीकों की जानकारी दी गई और राजुवास के किसान और पशुपालकों के उपयोगी साहित्य और पुस्तकों का वितरण किया गया। इस प्रदर्शनी में राज्य में स्वदेशी गौवंश के मॉडल का प्रदर्शन और पशु पोषण से संबंधित जानकारी में कृषकों ने पूरी रूचि दिखाई। कृषि

एवं पशुपालन जाजम में राजुवास के वैज्ञानिकों ने उपयोगी संवाद और वार्ताओं में शिरकत की। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित ''पशुपालन नए आयाम'' के ताजा अंक का विमोचन किया। देवस्थान विभाग के राज्य मंत्री श्री ओटाराम देवासी, कृषि विभाग की प्रमुख शासन सचिव नीलकमल दरबारी, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति प्रो. यू.एस. शर्मा, कोटा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी.एल. केशवा, कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के कुलपति प्रो. पी.एस. राठौड़ सहित कई गणमान्य अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के संकायाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, वेटरनरी कॉलेज वल्लभनगर के अधिष्ठाता प्रो. सी. एस. वैष्णव, राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह और कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने एग्रीटेक मीट में कृषकों और पशुपालकों का मार्गदर्शन किया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 18, 23, 24 एवं 28 नवम्बर को गांव गोगटिया चारनान, लुटाना मगनी, ढाणी कुम्हारान, रतनसरा एवं बीसलान गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 167 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 155 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 10, 13, 18 एवं 27 नवम्बर को श्रीगंगानगर, बनियावाली, सोमासर एवं मिर्जावाला गांवो में तथा 2 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 210 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 14, 16, 18, 21, 24 एवं 27 नवम्बर को गांव जोयला, सरदारपुरा, राजपुरा, मालेरा, गोल, मुंगथला एवं नागाणी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा 5 प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 2, 3, 4, 7 एवं 20 नवम्बर को गांव छपारा, धोलिया,

लाड़नू, कुसुम्बी तथा दुजार गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 18 महिला पशुपालकों सहित 151 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 135 महिला पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 25, 27, 28 एवं 29 नवम्बर को गांव सिंघाड़िया, रामावास, नांद एवं जैतपुरा बामनिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 140 महिला पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 283 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 10, 13, 14, 17, 20 एवं 22 नवम्बर को गांव पंचवाल, सुरेला, सुलई, बिलडी, गामडी, सागोट एवं पचलासा बड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 283 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8, 9, 10, 15, 22, 23, 24 एवं 25 नवम्बर को गांव दमदया, विढयारी, रूधावल, कठौल, झारकई, अकबरपुर, भौंडागांव एवं ऊनापुर गांवों में एवं दिनांक 13 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 74 महिला पशुपालकों सहित कुल 248 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 8, 9, 14, 17, 18, 23 एवं 25 नवम्बर को गांव सोनवा, पलाई, पराना, अरनिया–माल, पहाडी, नाथवाडा एवं मोटुका गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 9 महिला पशुपालकों सहित 177 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 14, 15, 21, 23 एवं 27 नवम्बर को गांव लालेरा, अजीतमाना, सुरनेना, खिंयारा, रामबाग, राजियासर भाटियान गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 204 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 13, 14, 21, 22, 27 एवं 28 नवम्बर को गांव डूंगरिया, बुजनगर, केलरवा, करीका–खेड़ा, सलोनिया, उम्मेदपुरा एवं रंगपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 34 महिला पशुपालकों सहित 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 6, 16, 18, 23 एवं 25 नवम्बर को गांव धाणी, मायरा, पांडोली, धागणमाउ कला, सेमलपुरा एवं मान्दलदा गांवो में तथा दिनांक 14, 21 एवं 28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 247 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 354 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 6, 8, 10, 13, 15, 16 एवं 18 नवम्बर को गांव फराकपुर, कनासिल, निथैरा खुर्द, एकटा, तगावली, जमालपुर, डण्डौली एवं चौकी का पुरा गांवों में तथा दिनांक 21 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 354 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 2, 7, 13, 15, 18, 23, 27 एवं 28 नवम्बर को गांव ठालडका, 16–17 केदनदन, देवासर, असारजना, 6 आरपीएम, 22 एनटीआर, सुरतपुरा एवं बेरवालो की ढाणी तथा 2–3, 8–9 एवं 20–21 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक एवं दो दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 340 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं का सर्दियों में प्रबंधन कैसे करें

पशुपालक भाईयों! दिसम्बर माह में वातावरण का तापमान काफी कम हो जाता है और पहाड़ी इलाकों में हिमपात होने की वजह से कई बार तापमान सामान्य से भी कम हो जाता है। वातावरण में अत्याधिक तापमान गिरने से पशुधन बहुत अधिक प्रभावित होता है जिसकी वजह से वयस्क पशुओं के उत्पादन में अप्रत्याशित कमी आती है एवं छोटे तथा नवजात बच्चों में शरीर का तापमान कम होने से मृत्यु भी हो जाती है। यदि पशुओं का इस मौसम के दौरान समुचित प्रबंध नहीं किया जाता है तो पशु सर्दी, जुकाम और न्यूमोनिया से ग्रसित हो सकते हैं। इस कारण उनसे उत्पादन भी घट जाता है और साथ ही उनकी मृत्यु की भी संभावना रहती है। इस प्रकार पशुपालक को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

सर्दी लगने पर पशु प्रारम्भ में कांपने लगता है, शरीर के बाल खड़े हो जाते हैं, श्लेष्मा झिल्लियां पीली पड़ने लग जाती है, पशु सुस्त हो जाता है, श्वांस व नाड़ी दर में कमी आती है और कुछ ही समय में पशु की मृत्यु भी हो सकती है। जिन पशुओं के पोषण में कमी होती है, ऐसे पशु शीघ्र प्रभावित होते हैं। पशुपालकों को चाहिये कि अत्याधिक सर्दी के समय पशुओं (विशेष तौर पर छोटे व नवजात) का प्रबंधन अच्छी तरह करें। रात के समय छप्पर के नीचे अथवा पशुघर के दरवाजे एवं खिड़कियों पर टाट की पल्लियां लगा दें और दिन के समय पशुओं को धूप में रखें। सीधी सर्द हवाओं से पशु का बचाव करें। यदि संभव हो तो पशु को पीने का पानी गुनगुना करके देवें। इसके साथ ही पशुपालक यह ध्यान रखें कि सर्दी से बचाव के लिए घर के अन्दर आग न जलायें एवं धुंआ न करें। धुएं से पशुओं में न्यूमोनिया होने का खतरा बढ़ जाता है। बड़े पशुओं को संतुलित आहार एवं लवण–मिश्रण दें एवं नवजात बच्चों को पर्याप्त मात्रा में खीस पिलायें। यदि पशु में सर्दी के लक्षण देखें तो पशु को गर्म स्थान पर बांधकर शरीर पर मालिश करने से शरीर का तापमान सामान्य किया जा सकता है। साथ ही पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क कर अपने पशुओं की जान बचायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

स्वाईन फ्लू : कारण और निवारण

स्वाईन फ्लू श्वसन तंत्र से जुडा संक्रामक रोग है। स्वाईन इनफ्लूएन्जा वायरस की पहचान पहली बार 1930 में अमेरिका में सूअर मांस कारोबारियो में की गयी थी । आमतौर पर इस रोग का वायरस सूअर में पाये जाने के कारण इसे स्वाईन फ्लू कहते हैं। यह वायरस न तो पशुओं और ना ही मनुष्यों के लिए घातक था परन्तु वायरस में उत्परिर्वतन के कारण यह महामारी का रूप लेकर पशुओं एवं मनुष्यों में घातक साबित हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे जून 2009 में महामारी घोषित कर दिया था। स्वाईन इनफ्लूएन्जा वायरस के कारण समूचे विश्व में कई लोगों की मृत्यु हो गयी थी।

कारण :– स्वाईन फ्लू, इनफ्लूएन्जा–A वायरस के H_1 N_1 स्ट्रेन के कारण होता है ।

फैलाव :– स्वाईन फ्लू एक संक्रामक रोग है। जब कोई व्यक्ति खांसता या छींकता है तो मुंह और नाक से निकलने वाली छोटी –2 बूंदों के साथ इस रोग के वायरस भी बाहर आ जाते हैं और इस रोग के वायरस हवा तथा कठोर सतह (स्टील, प्लास्टिक) पर 24–48 घंटे, कपड़ो एवं पेपर पर 8–12 घंटे, हाथों में 30 मिनट तथा टिशु पेपर पर 15 मिनट तक जीवित रहता है । हवा में रहने वाली छोटी –2 बूदें किसी भी व्यक्ति में श्वांस के साथ शरीर में प्रवेश कर संक्रमित कर सकती है। जब कोई व्यक्ति इन वायरस युक्त सूक्ष्म बूंदों से संक्रमित दरवाजे का हैंडल, कम्प्युटर की–बोर्ड, गिलास, तकिया, तौलिया या रिमोट आदि वस्तुओं को छूता है और संक्रमित हाथों को अपने मुंह या नाक के पास रखता है तो वह व्यक्ति स्वाईन फ्लू से संक्रमित हो सकता है ।

लक्षण :– स्वाईन फ्लू के लक्षण आम सर्दी, जुखाम जैसे ही होते हैं पर लापरवाही बरतने पर गंभीर लक्षण हो सकते हैं। आमतौर पर इन लक्षणों के प्रति सचेत रहने की जरूरत है ।

1. नाक से लगातार पानी बहना या छींक आना या नाक जाम हो जाना।
2. मांस पेशियों में खिचांव या अकड़न महसूस करना।
3. सिर में तेज दर्द, बुखार और ठंड लगना।
4. लगातार खांसी, गले में खराश या गले में कुछ अटका हुआ महसूस करना।
5. भूख न लगना, थकान और कमजोरी महसूस करना।

उपचार :– स्वाईन फ्लू के लक्षण पाए जाने पर संभावित मरीज की चिकित्सकीय जांच करवानी चाहिए और रिपोर्ट में बीमारी की पुष्टि होने पर तुरन्त चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिये क्योंकि समय रहते इस रोग का एंटीवायरल ड्रग टैमीफ्लू (ओस्ल्टामिविर) या रिलेन्जा (जनामिविर) या रपीवेक (पेरामिविर) के द्वारा उपचार किया जा सकता है। स्वाइन फ्लू से निम्नलिखित व्यक्तियों में खतरा अधिक रहता है:

1. 65 साल से अधिक उम्र के व्यक्ति एवं 5 साल से कम उम्र के बच्चे,
2. गर्भवती महिलाएं

3. ऐसे व्यक्ति जो मधुमेह, उच्च रक्तचाप, और कर्क रोग जैसी चिरकालिक बीमारी से पीड़ित हों
4. ऐसे व्यक्ति जिनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो।

बचाव के तरीके

स्वाइन फ्लू एक संक्रामक बीमारी है। अतः इसे फैलने से रोकने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाने चाहिए:

1. खांसी या छींकते समय टिशु पेपर का उपयोग करें और टिशु पेपर को ढक्कन वाले कूडे दान में फेंक दें अथवा नष्ट कर दें और अपने हाथों को साबुन से या हैंड वॉश से साफ कर लें।
2. खांसते या छींकते समय दूसरों से छः फीट से ज्यादा की दूरी बनाये रखें।
3. बेवजह भीड़–भाड़ वाले इलाके और अस्पताल में जाने से बचें।
4. स्वाइन फ्लू से प्रभावित इलाके में चेहरे पर मॉस्क पहनें और लोगों से अनावश्यक हाथ मिलाना या गले मिलना या संपर्क करना टालें।
5. अपने घर व काम–काज की जगह को साफ–सुथरा रखें।
6. स्वाइन फ्लू से प्रभावित क्षेत्र में सर्दी–जुकाम से पीड़ित व्यक्ति के साथ मेज या ऑफिस का सामान साझा नहीं करें।
7. अपने हाथों को हमेशा खाना खाने से पहले साबुन और पानी से 20 सैकण्ड तक धोएं।
8. अपनी रोग प्रतिरोधी शक्ति बढाने के उपाय करें।
9. स्वाइन फ्लू से बचने के लिए चिकित्सक की सलाह से नासोवेक टीका लगवा सकते हैं। इस टीके की 0.5 एम एल की मात्रा नाक में डाली जाती है, जो कि स्वाइन फ्लू वायरस से दो साल की सुरक्षा प्रदान करती है।
10. स्वाइन फ्लू के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार प्रारम्भ कर देना चाहिये।

डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. पंकज कुमार मंगल व डॉ. राजेश सिंघाठिया,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9413205638)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु विज्ञान अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

वेटरनरी विश्वविद्यालय के मुख्यालय पर पशु विज्ञान अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना वर्ष 2012–13 में की गई। इस केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य पशुपालन में अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी के महत्व के मद्देनजर नई तकनीक को विकसित कर पशु चिकित्सा और उपचार के लिए उपयोगी प्रौद्योगिकी का विकास करना है। केन्द्र में एक यांत्रिकी कार्यशाला का निर्माण कर विभिन्न जांच उपकरण स्थापित किए गए हैं। केन्द्र द्वारा बॉयोडायवर्सिटी म्यूजियम और वर्षा जल संग्रहण योजनाओं के प्रारूप तैयार कर लागू किये गए। पशुओं के उपचार में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के एनिमल ट्रेविस के मॉडल तैयार कर दिये गए। पशुओं के लिए फोगर टैक्निक का विकास कर अजोला फॉर्मिंग की योजना को मूर्त रूप देकर कार्यान्वयन किया गया। केन्द्र द्वारा विश्वविद्यालय का मास्टर प्लान तैयार किया गया है। विश्वविद्यालय परिसर में विशाल राष्ट्रीय ध्वज व स्वामी विवेकानन्द जी की प्रतिमा का साईट प्लान तैयार कर स्थापित किये गए हैं। यहां स्थापित गुण–नियंत्रक प्रयोगशाला में निर्माण कार्यों और भवन सामग्री की गुणवत्ता की जांच का कार्य किया जाता है। गुण नियंत्रण प्रयोगशाला में निर्माण मसाले की रासायनिक जांच के साथ–साथ अन्य गुणवत्ता के पैमानों की जांच पड़ताल के लिए आधुनिकतम तकनीकी उपकरण उपलब्ध करवाये गए हैं। प्रयोगशाला में एक ओ.टी.एम मशीन भी लगायी गयी है, जिससे विभिन्न निर्माण कार्यो में उपयोग हो रहे सरियों की भी जांच तथा गुणवत्ता रिपोर्ट का पता लगाया जाता है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	पाली, सिरोही, कोटा, सीकर, टोंक, बारां, चूरू, बीकानेर, हनुमानगढ़
मुंहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़, जालोर, नागौर, राजसमन्द, सीकर, टोंक, कोटा, चित्तौड़गढ़, बारां, चूरू, बीकानेर
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, धौलपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़, टौंक, भरतपुर
चेचक/छोटी माता	ऊँट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, पाली, सीकर
लंगड़ा रोग	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर
फेसियोलोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, सीकर, बून्दी, अलवर
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण	गाय, बकरी, भेड़	अजमेर, चित्तौडगढ़, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर, झुंझुनू, अलवर
अश्वों में इन्फ्लुएंजा रोग	घोड़ा	अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी अश्व वंश को पहचानें

मारवाड़ी अश्व : गौरव प्रदेश का

मारवाड़ी या मालानी अश्व राजस्थान के मुख्यतयाः बाड़मेर, मारवाड़ क्षेत्र में पायी जाने वाली अश्व की नस्ल है। यह नस्ल अपनी शक्ति के लिए बहुत मशहूर है। एक वयस्क अश्व की ऊंचाई 142 से 163 से.मी होती है। इनके कान आपस में अन्दर की तरफ मिले होते हैं। यह लगभग सभी अश्वों के रंगों में होता है लेकिन चितकबरा रंग अश्वों की खरीददारी में प्रचलित है। यह नस्ल राजस्थान, गुजरात के सीमांत जिलों में भी पायी जाती है। इस नस्ल का प्रयोग खेल, धार्मिक अनुष्ठान एवं घुड़सवारी के लिए किया जाता है। इसके अलावा पुलिस और सैन्य बलों में भी घोड़ों का उपयोग किया जाता है। सजीली व लचीली नस्ल की उत्पति राजपूत राजाओं द्वारा चयनात्मक प्रजनन द्वारा किया गया है। इस नस्ल का सिर लम्बा व नथुना मुलायम व मध्यम/ललाट चपटा व चौड़े होते हैं। वयस्क नर का भार 361 कि.ग्रा और मादा का 339 कि.ग्रा औसतन होता है। अश्व पालक दिन में दो बार इसका खुररा करता है जिससे बाह्य परजीवी से बचाव हो जाता है। साथ ही मालिक का अश्व से अपनत्व भी बढ़ता है। इसमें सूंघने व सुनने की विशिष्ट क्षमता होती है जो रेगिस्तान में इसको ओर भी उपयोगी बनाती है। साथ ही इसके रंग के कारण इसको ज्यादा गर्मी नहीं लगती। इस नस्ल का फॉर्म ''राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र'' बीकानेर में स्थित है। इस नस्ल की कुछ सोसायटी भी कार्यशील हैं जैसे कि उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर, चेतक घोड़ा, उदयपुर, इन्डो–जर्मन मारवाड़ी सोसायटी आदि। भारत में लगभग 38,696 मारवाड़ी अश्व हैं।

सफलता की कहानी

जिनेन्द्र चौधरी ने डेयरी उद्योग से आर्थिक सम्बल पाया

कोटा जिले के ग्राम–मालीपुरा के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक जिनेन्द्र सिंह चौधरी कृषि एवं पशुपालन के उचित सामंजस्य से पशुपालन को व्यवसाय रूप में अपनाकर अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना चुके हैं। पांच वर्ष पूर्व बहुत कम पशुओं से व्यवसाय शुरू किया। इनके पास खेती योग्य 5 बीघा जमीन है। वर्तमान में इनके पास कुल 65 गौवंश हैं जिनमें 9 गिर नस्ल एंव 15 अन्य नस्ल की हैं, बाकी छोटे–बड़े बछड़ा–बछड़ी हैं जो प्रमुख रूप से गिर नस्ल के हैं। गौवंश में ये गिर नस्ल की गायों को प्राथमिकता देते हैं। इस कार्य में छोटा भाई भी इसमें बराबर से मदद व सहयोग करता हैं। वर्तमान में 250 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है। उत्पादित दूध, शुद्धता के उचित मानक के साथ पैकिंग करके लोगों तक पहुंचाते हैं। इनकी गायें औसतन 20–25 लीटर दूध प्रतिदिन देती है। पशुपालन के कार्यों में सहयोग हेतु इन्होंने पांच लोगों को रोजगार भी दे रखा है। ये पशुओं को खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू आदि संक्रामक बीमारियों का टीकाकरण वर्ष में दो बार करवाते हैं। उन्नत पशुपालन तकनीकों जैसे कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग, संतुलित पशु आहार, खनिज लवण मिश्रण, कैलशियम आदि तकनीकों को अपना रखा है। इनको डेयरी से मासिक आय लगभग 1.50 लाख रूपये है। जिनेन्द्र सिंह वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा के लगातार सम्पर्क में रहकर केन्द्र द्वारा आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण से समय–समय पर उचित परामर्श एवं आवश्यक जानकारी लेते रहते हैं। ये अपने खेत में 2.5 बीघा में हरा चारा एवं 2.5 बीघा में दलहन फसलें करते हैं। जो इनके पशुओं के काम आती है। इनके मन में पशुपालन संबंधी ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा हमेशा रहती है। ''**ग्राम–2017 कोटा** '' में भी इन्होंने भाग लिया व विभिन्न तकनीकों के बारे मे जानकारी ली। वहां उन्नत पशुपालन तकनीकों सहित हरे चारे का साईलेज बनाना, अजोला उत्पादन, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आदि की जानकारी प्राप्त की। '' ग्राम–2017 कोटा '' में जिनेन्द्र चौधरी के गिर नस्ल के बुल (सांड) ने भी भाग लिया था। वे दूध निकालने की मशीन सहित अन्य नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हैं। इनके पास गिर नस्ल का सांड है। सम्पर्कः–**जिनेन्द्र चौधरी**, (मो 9460981189)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

भैंस पालन दुग्ध व्यवसाय का एक कारगर उपाय है

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाईयों और बहनों !

देश में भैंस पालन दुग्ध उत्पादन का एक प्रमुख जरिया है। 50–55 प्रतिशत दूध भैंसों से ही प्राप्त किया जाता है। 2012 की पशुगणना के अनुसार देश में कुल भैंसों की संख्या का 11.94 प्रतिशत राजस्थान में है, और यह देश में भैंस पालन में दूसरे स्थान पर है। भैंस पालन अन्य पालतू पशुओं की तुलना में ज्यादा सस्ता और आर्थिक दृष्टि से फायदेमंद है। एक ब्यांत में श्रेष्ठ नस्ल की भैंस 1400 से 3000 लीटर तक दूध देती है। भारत में भैंस की प्रमुख प्रजातियों में मुर्रा, सुरती, नीली–रावी, मेहसाना, जाफराबादी, भदावरी प्रमुख हैं। भैंसों में हल्की किस्म का चारा, तूड़ी, भूसी व फ़सल के अवशेष आदि के उपयोग में लेकर उन्हें प्रोटीन और वसा युक्त दुग्ध एवं बिना चर्बी के मांस में बदलने की अच्छी क्षमता होती है। इनका वजन अधिक होने के कारण गाय की तुलना में अधिक भोजन की आवश्यकता होती है। इनका दूध भी गाढ़ा, अधिक वसा और ठोस तत्वों वाला होता है। गर्मी सहन करने की क्षमता कम होने के कारण गर्मी के मौसम में ये पानी में बैठना पसंद करती हैं। भैंस के रखरखाव और प्रबंधन में समुचित व्यायाम, साफ चारे की पर्याप्त उपलब्धता, नहाने व बैठने की व्यवस्था, साफ–सफाई और नियमित टीकाकरण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भैंस में लैंगिक परिपक्वता गाय की तुलना में देरी से आती है। भैंस ताव के लक्षण रात्रि में दिखाती है। मध्य रात्रि के दौरान ज्यादा अच्छा देखा जा सकता है। भैंस तुलनात्मक रूप से रिंडर पेस्ट, गलघोटू बीमारी के प्रति गायों से ज्यादा संवेदनशील होती है। सामान्यतया इसमें गर्भ काल 10 महीने 10 दिन का होता है। मादा की प्रथम ब्यांत 3.5 से 4.5 वर्ष की उम्र में होती है। दुग्ध व्यवसाय को परवान चढ़ाने के लिए भैंस पालन एक कारगर उपाय है। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **दिसम्बर, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. देवीसिंह राजपूत** 9461014303 पशु प्रसार शिक्षा विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	दुधारू गायों के चयन हेतु सुझाव	07.12.2017
2	**डॉ. रजनी जोशी** 9414253108 जनस्वास्थ्य विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	ऊंटों में होने वाले प्रमुख रोगों का कारण एवं उनका निवारण	14.12.2017
3	**डॉ. एस.सी. गोस्वामी** 9414604655 अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, राजुवास, बीकानेर	नवजात बछड़ों में सर्दी से बचाव व प्रबन्धन	21.12.2017
4	**डॉ. महेन्द्र तंवर** 9460783040 पशुशल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	गौ जातियों में वक्ष उदर शल्य विकार व निदान	28.12.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224